www.thearyasamaj.org

...74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 73 अंक : 34
सृष्टि संवत् 1960853117
20 नवम्बर, 2016
दयानन्दब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–73, अंक : 34, 17-20 नवम्बर 2016 तदनुसार 6 मार्गशीर्ष सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

अथर्ववेद के ज्ञान से पौरोहित्य

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

अग्निर्जातो अथर्वणा विदद्विश्वानि काव्या।
भुवद्दूतो विवस्वतो वि वो मदे प्रियो यमस्य काम्यो विवक्षसे।।

-ऋ० १०।२१।५

शब्दार्थ-अथर्वणा = अथर्ववेद से, अथर्ववेद के ज्ञान में **जातः** = प्रसिद्ध होकर **अग्निः** = ज्ञानी = पुरोहित **विश्वानि** = सम्पूर्ण **काव्या**= परम कवि के वचन-वेद तथा कवि के कर्त्तव्यों को **विदत्**= जाने, प्राप्त करे और विचारे। वह **विवस्वतः** = विवस्वान् का, काल का **दूतः** = दूत **भुवत्** = होता है और **वः** = तुम्हारे **मदे** = मद = आनन्द के लिए तथा **विवक्षसे** = विशेष कथन के लिए तथा विशेष भार उठाने के लिए **यमस्य** = संयम का **वि** = विशेष **प्रियः** = प्यारा = प्रेमी होता है।

व्याख्या-वेद में कई स्थानों पर अग्नि को पुरोहित कहा गया है। वेद का आरम्भ ही अग्नि को पुरोहित मानकर हुआ है-

१. **'अग्निमीळे पुरोहितम्'** [ऋ० १।१।१] पुरोहित अग्नि की स्तुति करता हूँ।

२. **'असि ग्रामेष्वविता पुरोहितोसि यज्ञेषु मानुषः'** [ऋ.० १।४४।१०] ग्रामों में तू रक्षक है और यज्ञों में मनुष्य का हितकारी पुरोहित है।

इसी प्रकार के अन्य बीसियों वैदिक प्रमाण हैं, जिनमें अग्नि को पुरोहित बताया गया है।

पुरोहित बनने के लिए अथर्ववेद का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि पुरोहित द्वारा कराये जाने वाले सम्पूर्ण संस्कारों के मन्त्र अथर्ववेद में हैं। अथर्ववेद में शरीर और आत्मा को संस्कृत करने के साधन विशद रूप से समझाये गये हैं।

अथर्ववेद अन्तिम वेद है, उसको समझने के लिए पहले तीन वेदों का जानना भी आवश्यक है, अर्थात् अथर्ववेद समाप्त करते-करते सम्पूर्ण वेदों का ज्ञान हो जाता है। इसीलिए कहा है-**'विदद्विश्वानि काव्या'** = परम कवि के सम्पूर्ण वचनों को जान लेता है, अथवा पुरोहित के सकल कर्त्तव्यों को जान लेता है। पुरोहित काल की सूचना देता है, अर्थात् किस समय क्या करना चाहिए और क्या न करना चाहिए, इसका उपदेश करना पुरोहित का काम है। दूसरे शब्दों में मनुष्य को अपनी दिनचर्या और जीवनचर्या पुरोहित के निर्देश के अनुसार बनानी चाहिए। बहुधन्धी मनुष्य बहुधा अपने कर्त्तव्य को भूल जाता है। पुरोहित उसे सावधान करता रहता है। पुराने आर्यों में एक नियम था कि वे अपने परिवार का एक पुरोहित अवश्य नियत करते थे। पुरोहित अपने यजमान के सब दुःखों का निवारण करता था। राजा दिलीप ने पुरोहित-प्रवर वसिष्ठ को कहा था-

उपपन्नं ननु शिवं सप्तस्वंगेषु यस्य में।
दैवीनां मानुषीणां च प्रतिहर्त्ता त्वमापदाम्।।

-रघुवंश, १।६०

सचमुच मेरे राज्य के सातों अङ्गों में कल्याण हैं, क्योंकि मेरी दैवी और मानुषी आपत्तियों को दूर करने वाले आप हो।

यह कोरी कविकल्पना नहीं है। वैदिक पुरोहित ऐसे ही हुआ करते थे। अथर्ववेद का ३।१९ समस्त सूक्त पुरोहित का घोष है। पुरोहित कहता है-

'प्रेता जयता नर उग्रा वः सन्तु बाहवः' [अ० ३।१९।७] = हे मनुष्यो ! आगे बढ़ो, विजय करो। तुम्हारे भुजा उग्र हों।

'एषां राष्ट्रं सुवीरं वर्धयामि' [अ० ३।१९।५] = इनके राष्ट्र को उत्तम वीरों से भरपूर करके बढ़ाता हूँ।

'जिष्णवेषां चित्तम्' [अ० ३।१९।५] = इनका चित्त जयशील हो।

'संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामस्मि पुरोहितः' [अ० ३।१९।१] = जिनका मैं पुरोहित हूँ, उनका सुतीक्ष्ण क्षात्र तेज अजर रहे, घटे नहीं।

अथर्ववेद से यदि पुरोति बनना है तो पुरोहित की महिमा भी वहीं गाई गई है।

पुरोहित बनने के लिए संयमी होना चाहिए, यह मन्त्र के अन्त में कहा गया है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

www.thearyasamaj.org

क्या वैदिक वर्णव्यवस्था वर्तमान युग में व्यावहारिक है ?

ले० –मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून-196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

वैदिक वर्ण व्यवस्था क्या है ? वैदिक वर्ण व्यवस्था वह सामाजिक व्यवस्था है जिसमें समाज के सभी मनुष्यों को उनके गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र में वर्गीकृत किया गया है। यह व्यवस्था वर्तमान की जन्मना जाति व्यवस्था अर्थात् मनुष्य के जन्म पर आधारित व्यवस्था से पूर्व वैदिक काल में प्रचलित रही है। वर्तमान की यह जन्मना जाति व्यवस्था वैदिक वर्णव्यवस्था का बिगड़ा हुआ रूप है। वर्तमान जन्मना वर्ण व्यवस्था में एक ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय का क्षत्रिय, वैश्य का वैश्य और शूद्र का शूद्र होता है, भले ही उनके गुण-कर्म-स्वभाव कैसे भी, अच्छे व बुरे, क्यों न हों। इस व्यवस्था में एक ब्राह्मण का पुत्र व पुत्री चाहे वह अनपढ़ हो, मद्यपायी और मांसाहारी भी हो, समाज विरोधी कार्य भी करते हों तो भी वह ब्राह्मण कहलाते हैं और शूद्र कुल में उत्पन्न बालक व बालिकायें सुशिक्षित, सुसंस्कारित, वेदाध्यायी, वेदज्ञ, सच्चरित्र, शुद्ध आचरण करने वाले हों, तब भी वह शूद्र जातियों के ही कहलाते हैं। इन चार वर्ण वाले लोगों व उनकी सन्तानों का वर्तमान जन्मना वर्ण व्यवस्था में गुणों, कर्मों व उनके स्वभाव से कोई लेना देना नहीं है। दूसरी ओर वैदिक वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण तभी हो सकता है जब कि वह वेदों का ज्ञानी व विद्वान होने के साथ अध्ययन व अध्यापन करता-कराता हो, यज्ञ करता व कराता हो तथा दान देता व लेता हो। उसका पंच महायज्ञों को करना तथा सच्चरित्र होना भी आवश्यक व अपरिहार्य है। यदि उसमें यह गुण, कर्म व स्वभाव नहीं हैं तो वह ब्राह्मण न होकर अपने गुणों आदि के अनुसार वर्णवाला होगा जिसमें वह शूद्र भी हो सकता है। इसी प्रकार यदि शूद्र में ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य के लिए आवश्यक गुण आदि हैं तो उसका वही वर्ण होगा जिस प्रकार के गुण उसमें हैं। यह वैदिक वर्ण व्यवस्था सृष्टि के आरम्भ में कब आरम्भ हुई और कब समाप्त हुई, इसकी जानकारी हमारे शास्त्रों से विदित नहीं होती। महाभारत में जन्मना जाति व्यवस्था प्रचलित थी, ऐसा ही प्रतीत होता है। कुछ थोड़े से अपवाद हो सकते हैं परन्तु उनके भी वर्ण के निर्धारण के बारे में समुचित जानकारी नहीं है। क्या वैदिक वर्ण व्यवस्था व्यावहारिक है ? इसका उत्तर जानने के लिए कुछ अन्य पहलुओं पर विचार करना आवश्यक है। आज गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था देश-देशान्तर में कहीं सुस्थापित नहीं है। सर्वत्र जन्मना जाति व्यवस्था है जो कि वैदिक वर्ण व्यवस्था का विकृत रूप है। सन् 1947 में देश आजाद हुआ और इसका विभाजन भी हुआ। भारत का संविधान बना जिसमें देश के सभी नागरिकों को समान अधिकार दिये गये हैं जो कि वर्णाश्रम व्यवस्था की मूल भावना से मेल नहीं खाते। आज किसी भी जन्मना वर्ण व जाति का मनुष्य अपनी योग्यता आदि के अनुसार भारत के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति तक बन सकता है। इसी प्रकार से सभी वर्णों के लोग अपने गुण, कर्म, स्वभाव, पात्रता व योग्यता के अनुसार समाज में नौकरी, व्यवसाय स्वयं चुनते हैं और करते हैं। कहीं जन्मना ब्राह्मण उच्चाधिकारी हैं तो कहीं क्षत्रिय, वैश्य व जन्मना शूद्र।

अत: आज वैदिक वर्णव्यवस्था कहीं प्रचलित नहीं है, यही स्पष्ट होता है। आर्य हिन्दुओं में सर्वत्र जो सामाजिक व्यवस्था प्रचलित है उसका नाम है जन्मना जाति व्यवस्था जो कि वैदिक वर्ण व्यवस्था का बिगड़ा हुआ रूप है। कहा जाता है कि वर्ण का निर्धारण गुरुकुलों में शिक्षारत ब्रह्मचारियों के समावर्तन संस्कार के अवसर पर आचार्य किया करते थे। आर्यसमाज ने गुरुकुल खुले परन्तु कभी अपने स्नातकों को वर्ण का आबंटन नहीं किया। वर्तमान में वैदिक वर्ण व्यवस्था को स्थापित व प्रचलित करने के लिए आर्यसमाज की ओर से कोई प्रयास व आन्दोलन भी नहीं हो रहा है। जन्मना जाति मानने वालों की ओर से भी वैदिक वर्ण व्यवस्था प्रचलित करने का कहीं से किसी प्रकार का कोई आग्रह नहीं है।

अत: आज जन्मना जाति व्यवस्था ही प्रचलित है। हमें लगता है कि इस व्यवस्था को ही वर्तमान में व्यावहारिक कहना और मानना होगा। हो सकता है कि हमारे कुछ आर्यबन्धु और विद्वान हमसे सहमत न हों ? हम ऐसे मित्रों का स्वागत करते हैं और हमारा मत है कि हम सत्य को ग्रहण करने के लिए तत्पर हैं। अत: विद्वानों से प्रार्थना करते हैं कि वह वैदिक वर्ण व्यवस्था वर्तमान समय में व्यावहारिक है अथवा नहीं, इस पर अपनी सहमति व असहमति सूचित करने की कृपा करें। श्रम व मनुष्यों के कार्यों के विभाजन पर विचार करें तो आज मनुष्य जो जो काम करता है उसकी संख्या सहस्त्रों में हैं। किस योग्यता वाला व कौन-कौन काम करने वाला व्यक्ति ब्राह्मण व इतर वर्ण का होगा, इसका वर्गीकरण करना असम्भव नहीं तो कठिन व जटिल अवश्य है। एक व्यक्ति एक साथ नाना प्रकार के कार्य भी करता है और जीवन में समय-समय पर अपने कार्य बदलता भी रहता है। अत: आज की परिस्थितियों में वैदिक वर्ण व्यवस्था को लागू नहीं किया जा सकता, ऐसा लगता है। यह भी तथ्य है कि बिना वैदिक वर्ण व्यवस्था की स्थापना के देश व संसार का अधिकांश कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। हां, वर्तमान व्यवस्था में मनुष्य अपने योग-क्षेम अथवा अब्युदय व नि:श्रेयस से कोसों दूर है। महर्षि दयानन्द एक पौराणिक जन्मना ब्राह्मण परिवार से आये थे। वह गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार सच्चे ब्राह्मण थे परन्तु उनका यह वर्ण कहीं निश्चित नहीं किया गया था। वह योग-क्षेम और मोक्ष के पात्र बने। उनके अनुयायी अनेक वर्णों से थे जिन्होंने वेदाध्ययन किया और वेद प्रचार व समाज सुधार आदि के कार्यों सहित पंचमहायज्ञों को भी पूरी निष्ठा से करते थे। उनका भी कहीं कोई वर्ण निर्धारित नहीं किया गया। वह सभी धर्म अर्थ, काम व मोक्ष के अधिकारी बने। महर्षि दयानन्द ने वेदाध्ययन सहित सन्ध्या व यज्ञ करने, जो कि वर्णव्यवस्था में केवल द्विज ही कर सकते हैं, का सबको अधिकार दिया है तथा आर्यसमाज में सभी न्यूनाधिक करते भी हैं जिससे सभी धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के अधिकारी बनते हैं। उन्होंने समर्पण मन्त्र लिखकर सभी सन्ध्या करने वालों को मोक्ष का अधिकारी बना दिया है। ईश्वर को भी यह स्वीकार है, ऐसा प्रतीत होता है। मनुष्य जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने में वर्ण बाधक नहीं बन रहे हैं। अत: हमें लगता है कि आज के समय में सब मनुष्य एक ही वर्ण 'मनुष्य वर्ण' के ही हैं, भले ही वह अपने विषय में कुछ भी मानते व कहते हों। सबको मनुष्य मानकर और वैदिक कर्मकाण्ड व परम्पराओं आदि का पालन कर कोई भी मनुष्य अभ्युदय व नि:श्रेयस की प्राप्ति कर सकता है। योगाभ्यास कर समाधि अवस्था को प्राप्त होकर ईश्वर साक्षात्कार भी कर सकता है। इसमें कहीं कोई बाधा नहीं है। अत: आज बिना वर्णव्यवस्था के समाज के सभी काम किये जाना सम्भव है। यह भी वर्णन कर दें कि महर्षि दयानन्द ने एक स्थान पर वर्ण व्यवस्था के स्वरूप से खिन्न होकर इसे ''मरण व्यवस्था लिखा है। वह भी यह स्वीकार करते हुए प्रतीत होते हैं कि उन्हें लगता था कि वैदिक वर्ण व्यवस्था को प्रचलित करना सरल नहीं है।

इस आधार पर हमें लगता है कि यद्यपि वैदिक वर्णव्यवस्था सिद्धान्त रूप में सत्य, निर्विवाद एवं

(शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

सत्यार्थ प्रकाश में अध्ययन-अध्यापन विधि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में अध्ययन-अध्यापन विषय पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि हमारी अध्यापन प्रणाली कैसी होनी चाहिए? आईए महर्षि दयानन्द के शब्दों में ही इस विषय पर ध्यानाकर्षण करते हैं-सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा,गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना, माता-पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने, चांदी, माणिक, मोती, मूँगा, आदि रत्नों से युक्त आभूषणों के धारण कराने से मनुष्य का आत्मा सुभूषित कभी नहीं हो सकता। क्योंकि आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु का भी सम्भव है। संसार में देखने में आता है कि आभूषणों के योग से बालकादिकों का मृत्यु दुष्टों के हाथ से होता है।

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः सत्यव्रता रहितमान-मलःपहाराः।

संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये धन्या नरा विहितक-र्मपरोपकाराः।।

जिन पुरूषों का मन विद्या के विलास में तत्पर रहता, सुन्दर शील स्वभाव युक्त, सत्यभाषणादि, नियम पालनयुक्त और अभिमान अपवित्रता से रहित, अन्य की मलीनता के नाशक, सत्योपदेश, विद्यादान से संसारी जनों के दुःखों के दूर करने से सुभूषित, वेदविहित कर्मों से पराये उपकार करने में रहते हैं, वे नर और नारी धन्य हैं। इसलिए आठ वर्ष के हों तभी लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की शाला में भेज देवें। जो अध्यापक पुरूष वा स्त्री दुष्टाचारी हों उनसे शिक्षा न दिलावें, किन्तु जो पूर्ण विद्यायुक्त धार्मिक हों वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य हैं।

द्विज अपने घर में लड़कों का यज्ञोपवीत और कन्याओं का भी यथायोग्य संस्कार करके यथोक्त आचार्य कुल अर्थात् अपनी-अपनी पाठशाला में भेज दें। विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए और वे लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोश एक दूसरे से दूर होनी चाहिए। जो वहां अध्यापिका और अध्यापक पुरूष वा भृत्य अनुचर हों वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरूषों की पाठशाला में पुरूष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में पांच वर्ष का लड़का और पुरूषों की पाठशाला में पांच वर्ष की लड़की भी न जाने पावे। अर्थात् जब तक वे ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी रहें तब तक स्त्री वा पुरूष का दर्शन, स्पर्शन, एकान्तसेवन, भाषण, विषयकथा, परस्परक्रीडा, विषय का ध्यान और सङ्ग इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहें और अध्यापक लोग उनको इन बातों से बचावें। जिस से उत्तम विद्या, शिक्षा, शील, स्वभाव, शरीर और आत्मा के बलयुक्त होके आनन्द को नित्य बढ़ा सकें।

पाठशालाओं से एक योजन अर्थात् चार कोश दूर ग्राम वा नगर रहे। सब को तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिए जाएं, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र के सन्तान हों, सबको तपस्वी होना चाहिए। उनके माता-पिता अपने सन्तानों से वा सन्तान अपने माता-पिताओं से न मिल सकें और न किसी प्रकार का पत्र व्यवहार एक दूसरे को कर सकें, जिस से संसारी चिन्ता से रहित होकर केवल विद्या बढ़ाने की चिन्ता रखें। जब भ्रमण करने को जायें तब उनके साथ अध्यापक रहें, जिससे किसी प्रकार की कुचेष्टा न कर सकें और न आलस्य प्रमाद करें।

कन्यानां सम्प्रदानं च कुमाराणां च रक्षणम्।। मनु.।।

इसका अभिप्राय यह है कि इसमें राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़कों और लड़कियों को घर में न रख सकें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजे वह दण्ड़नीय हो। प्रथम लड़कों का यज्ञोपवीत घर में ही हो और दूसरा पाठशाला में आचार्यकुल में हो। पिता-माता वा अध्यापक अपने लड़के लड़कियों को अर्थसहित गायत्री मन्त्र का उपदेश कर दें। वह मन्त्र-

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

इस मन्त्र में जो प्रथम ओ३म् है उसका अर्थ प्रथम समुल्लास में कर दिया है। अब तीन महाव्याहृतियों के अर्थ संक्षेप में लिखते हैं- **भूरिति वै प्राणः, यः प्राणयति चराचरं जगत् स भूः स्वयम्भूरीश्वरः** जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भू है उस प्राण का वाचक होके भूः परमेश्वर का नाम है। **भुवरित्यपानः, यःसर्वं दुःखमपानयति सः अपानः,** जो सब दुःखों से रहित,जिस के संग से जीव सब दुःखों से छूट जाते हैं इसलिए उस परमेश्वर का नाम भुवः है। स्वरिति व्यानः, यो विविधं जगद् व्यानयति व्यापनोति स व्यानः। जो नानाविध जगत् में व्यापक होके सब का धारण करता है इसलिए उस परमेश्वर का नाम स्वः है। ये तीनों वचन तैत्तिरीय आरण्यक के हैं।

(सवितुः) यःसुनोत्युत्पादयति सर्वं जगत् स सविता तस्य। जो सब जगत् का उत्पादक और सब ऐश्वर्य का दाता है। **(देवस्य) यो दीव्यति दीव्यते वा स देवः।** जो सर्वसुखों का देनेहारा और जिस की प्राप्ति की कामना सब करते हैं। उस परमात्मा का जो(**वरेण्यम्)वर्त्तुमर्हम्** स्वीकार करने योग्य अतिश्रेष्ठ (**भर्गः**) शुद्धस्वरूप और पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्मस्वरूप है(**तत्**) उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग (**धीमहि**) धरेमहि धारण करें। किस प्रयोजन के लिए कि (**यः**) **जगदीश्वरः** जो सविता देव परमात्मा (**नः**) अस्माकम् हमारी (**धियः**) बुद्धियों को (**प्रचोदयात्**) प्रेरयेत् प्रेरणा करे अर्थात् बुरे कामों से छुड़ा कर अच्छे कामों में प्रवृत्त करे।

हे मनुष्यों! जो सब समर्थों में समर्थ सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप, नित्य शुद्ध, नित्य बुद्ध, नित्यमुक्तस्वभाव वाला, कृपासागर, ठीक=ठीक न्याय का करनेहारा, जन्ममरणादि क्लेशरहित, आकाररहित,सब के घट-घट का जानने वाला, सब का धर्ता, पिता, उत्पादक, अन्नादि से विश्व का पोषण करनेहारा, सकल ऐश्वर्ययुक्त जगत् का निर्माता, शुद्धस्वरूप और जो प्राप्ति की कामना करने योग्य है उस परमात्मा का जो शुद्ध चेतनस्वरूप है उसी को हम धारण करें। इस प्रयोजन के लिए कि वह परमेश्वर हमारे आत्मा और बुद्धियों का अन्तर्यामीस्वरूप हम को दुष्टाचार अधर्मयुक्त मार्ग से हटा के श्रेष्ठाचार सत्य मार्ग में चलावें, उसको छोड़कर दूसरे किसी वस्तु का ध्यान हम लोग नहीं करें। क्योंकि न कोई उसके तुल्य और न अधिक है वही हमारा पिता राजा न्यायाधीश और सब सुखों का देनेहारा है।

इस प्रकार गायत्री मन्त्र का उपदेश करके सन्ध्योपासना की जो स्नान, आचमन, प्राणायाम आदि क्रिया हैं सिखलावें। प्रथम स्नान इसलिए है कि जिससे शरीर के बाह्य अवयवों की शुद्धि और आरोग्य आदि होते हैं।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

www.thearyasamaj.org

धर्म पर मरने वाले आर्य समाजियों का जीवन परिचय''

–ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (हो तल्ला) कोलकत्ता-700007

वैसे तो आर्य-समाजियों की देश, धर्म व समाज के लिए मरने वालों की काफी बड़ी श्रृंखला है, जिनमें क्रान्तिकारियों में भगत सिंह, रामप्रसाद विस्मिल, श्यामकृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द व लाला हरदयाल M.A आदि अनेकों आर्य समाजियों ने देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये या जेलों में रहकर कठिन यातनाएँ सही। वैदिक धर्म की रक्षा व उसे फैलाने के लिए तथा शुद्धि कार्य को करने के लिए भी आर्य समाजियों के बलिदान कोई कम नहीं है। सब से पहले आर्य-समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने ही वैदिक धर्म को फैलाने के लिए तथा सत्य से विचलित न होने के लिए अपने प्राण दिये, यह किसी से छिपा हुआ नहीं है। प्रत्येक स्वाध्यायशील व्यक्ति उनके बलिदान को जानता है। स्वामी जी के बाद भी पाँच महापुरुषों ने अपने प्राण, वैदिक धर्म की रक्षा व फैलाने के लिए हँसते-हँसते समर्पित किये जिनमें से पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द व महाशय राजपाल को तो काफी स्वाध्याय शील व्यक्ति जानते हैं, परन्तु दो आर्य समाजी जिनके नाम श्रीयुत् तुलसी राम व म० रामचन्द्र हैं जिनको बड़े स्वाध्याय-शील व्यक्ति भी नहीं जानते, उनके साथ हम बड़ा अन्याय कर रहे हैं। उन बलिदानियों की जानकारी सब पाठको को हो, इस उद्देश्य से मैंने यह लेख लिखा है। उन पाँच बलिदानियों का जीवन परिचय इसी भाँति है-

१. पं० लेखराम-पं० लेखराम आर्य मुसाफिर, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के एक अत्यन्त उत्साही और निर्भीक उपदेशक थे। उन्होंने उर्दू भाषा में वैदिक धर्म सम्बन्धी बहुत-सी पुस्तकें लिखी और मुसलमानों की पुनर्जन्मादि विषयक शंकाओं का बहुत अच्छा उत्तर दिया। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती की एक उत्तम जीवनी भी लिखी। उनके निर्भयता पूर्वक वैदिक धर्म प्रचार तथा शुद्धि के कार्यों से कुछ मुसलमान चिढ़ गये और एक मतान्ध मुसलमान ६ मार्च १८९६ को पं० लेखराम जी के पास आया और शुद्ध होने की इच्छा प्रकट की साथ ही बीमार होने का बहाना भी किया। उस समय पण्डित जी महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र लिखकर थकावट हटाने के लिए अंगड़ाई ले रहे थे, उस दुष्ट व्यक्ति ने मौका पाकर अपने काले कम्बल में छिपाए धुरे से उन पर वार कर दिया जिससे घायल होकर उनके प्राण-पखेरू उड़ गये। इस प्रकार महर्षि दयानन्द के बाद पं० लेखराम का धर्म के लिए पहला बलिदान हुआ।

२. इनके बाद पंजाब प्रान्त के फरीदकोट रियासत के निवासी श्रीमत तुलसीराम जी नामक सज्जन का बलिदान स्मरण रखने योग्य है। यह महाशय स्टेशन मास्टर होते हुए समय निकाल कर धर्म प्रचार में लगे रहते थे। जैन मत का उन्होंने अच्छी प्रकार अध्ययन किया था और उनके ग्रन्थों व सिद्धान्तों को वे निर्भय होकर समालोचना किया करते थे, जिससे चिढ़कर कुछ जैनियों ने उन्हें एक दिन रात के समय सड़क पर जाते हुए घेर लिया और मिर्च मिली रेत उनके ऊपर फेंक कर तथा डण्डे मारकर उन्हें मार डाला। यह एक आर्य समाजी का धर्म के लिए दूसरा बलिदान था।

३. इसके बाद महाशय रामचन्द्र नामक एक जम्मू प्रान्त वासी सज्जन का बलिदान जो रियासत में खजाँची का काम करते थे, यह महाशय मेघ नामक अछूत कहलाने वाली जाति के उद्धार के लिए बहुत प्रयत्न करते थे। इनके प्रयास से दूसरे लोगों ने भी उस विषय में खास कोशिश शुरु कर दी थी। पर कई राजपूतों को यह बात बुरी लगी, उन्होंने मं० रामचन्द्र पर लाठियों से वार कर दिया और उन्हें मार कर ही छोड़ा। इस प्रकार दलितोद्धार और धर्म-प्रचार का पवित्र कार्य करते हुए इनका बलिदान अपने ही भूले-भटके राजपूत भाईयों के हाथ केवल २६ वर्ष की उम्र में हुआ। इनके बलिदान का परिणाम यह हुआ कि दलितोद्धार का काम खूब जोर-शोर से होने लगा। जिन राजपूत भाईयों ने पं० रामचन्द्र को मारा था, वे खुद आर्य समाज के बड़े प्रेमी बन गये और इस तरह बीस हजार के लगभग मेघों को थोड़े ही समय में आर्य समाज में शामिल कर लिया गया।

४. यह बलिदान पूज्यपाद स्वामी श्रद्धानन्द जी का दिल्ली में २३ दिसम्बर १९२६ को अब्दुल रशीद नामक मतान्ध मुसलमान के हाथों हुआ था। इसका विशेष कारण श्री स्वामी जी का शुद्धि-विषयक आन्दोलन को जोर से चलाना था, जिससे मतान्ध मुसलमान चिढ़ते थे और श्री स्वामी जी को मारने का षडयन्त्र व साजिश करते रहे थे। श्री स्वामी जी के पास इस तरह के बहुत पत्र भी आते थे जिनमें उन्हें शुद्धि कार्य को बन्द करने और ऐसा न करने पर मारे जाने की धमकी दी जाती थी, पर स्वामी श्रद्धानन्द जी एक निर्भीक, धर्मवीर संन्यासी थे। वे ऐसी धमकियों की ज़रा भी प्रवाह न करते हुए धर्म का काम किए चले जाते थे। उनके प्रयत्न से एक लाख से अधिक मलकाने राजपूत, जो बहुत समय पूर्व मुसलमान बनाए जा चुके थे, फिर आर्य धर्म (हिन्दू धर्म) में दीक्षित दिए गये। २५ मार्च १९२६ को असगारी बेगम को उसकी इच्छानुसार शुद्ध करके शान्तिदेवी नाम दिया गया। इससे मतान्ध मुसलमान बहुत चिढ़े और श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा उनके साथियों पर जबरदस्ती शुद्ध करने का मुकद्दमा चलाया। इस मुकद्दमे का फैसला श्री स्वामी जी के पक्ष में हुआ। इससे मुसलमानों का क्रोध और भी बढ़ गया। अन्त में अब्दुल रसीद नामक एक मुसलमान श्री स्वामी जी के मकान पर २३ दिसम्बर सन् १९२६ को आया और पानी पीने को मांगा। पानी पी कर उसने स्वामी जी पर चार गोलियाँ चलाई और उनके पवित्र जीवन का अन्त कर दिया। यह महर्षि दयानन्द के बार चौथा बलिदान था।

५. यह बलिदान लाहौर के एक प्रसिद्ध आर्य पुस्तकालय के संचालक महाशय राजपाल जी का ६ अप्रैल १८२८ को एक इल्मदीन नामक मतान्ध मुसलमान के हाथों लाहौर में हुआ। इसका कारण यह था कि महाशय राजपाल जी द्वारा प्रकाशित ''रंगीला रसूल'' नामक पुस्तक से मुसलमान चिढ़े हुए थे। कहानी इस भाँति है कि मुसलमानों ने भगवान श्री कृष्णा और महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में कुछ अश्लील पुस्तकें मन घड़न्त छाप दी थी। आर्य समाज के एक महान् विद्वान पं० चमूपति जी ने इनके बदले में मोहम्मद साहब का पूरा जीवन पढ़ कर एक ''रंगीला रसूल'' नाम की पुस्तक छापी जो उन मनघड़न्त अश्लील पुस्तकों का एक सही उत्तर था। इसका प्रकाशन महाशय राजपाल जी ने यह कह कर किया कि मैं पं० चमूपति जी का नाम न छापते हुए इस पुस्तक का प्रकाशन करूँगा और उन्होंने प्रकाशित कर दी। मुसलमानों के बहुत कहने पर भी कि आप इस पुस्तक के लिखने वाले का नाम बतला दो तो हम आपको कुछ नहीं कहेंगे परन्तु महाशय जी ने विद्वान् का नाम नहीं बतलाया और वे एक मतान्ध मुसलमान युवक के हाथों मर कर मोक्ष धाम को प्राप्त हुए। यह महर्षि दयानन्द के बाद धर्म के लिए पाँचवा बलिदान था। यह एक विचित्र ढंग का बलिदान था जिसमें एक बलिदानी ने एक बड़े वैदिक विद्वान् के प्राण बचाने के लिए अपने प्राण देकर अमर हो गये।

मैं इन सभी बलिदानी महापुरूषों को नमन होकर श्रद्धाञ्जली अर्पित करता हूँ।

www.thearyasamaj.org

मृत्यु पर विजय

ले. नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20, पंचकूला मो. 09467608686, 01724001895

योगेश्वर कृष्ण ने विषाद में फंसे अर्जुन को गीता का ज्ञान देते हुए जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः कहकर जिसका भी जन्म हुआ है उसकी मृत्यु को अवश्यंभावी बता दिया। जन्म अर्थात न्यायकर्ता परमपिता परमेश्वर की न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत जीवात्मा के पूर्व जन्मों के कर्मों के फलों के अनुरूप उसे उपयोग के लिए एक साधन के रूप में मनुष्य का तन प्रदान करने के संयोग को ही जन्म कहते हैं। ठीक इसके विपरीत अपनी आयु पूर्ण कर लेने के उपरान्त आत्मा का जीर्णशीर्ण मरणधर्मा शरीर के त्याग को ही मृत्यु कहते हैं। वेद भगवान ने भी 'मृत्युरीशे' कहकर स्पष्ट कर दिया कि मृत्यु अवश्यंभावी है तो मृत्यु पर विजय कैसे प्राप्त की जा सकती है।

मृत्यु पर विजय को समझने के लिए हमें पहले ये समझना होगा कि मृत्यु किसकी होती है और हम कौन हैं और क्या हम मरणधर्मा हैं। प्रथम प्रश्न मृत्यु किसकी होती है का उत्तर भी योगेश्वर कृष्ण ने गीता के ज्ञान में देते हुए पांच मूल तत्वों अग्नि, जल, वायु, आकाश और पृथ्वी के संयोग व मिलन से बने इस मनुष्य शरीर व साधन को ही मरणधर्मा बताया। साथ ही साथ **नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः** ...कहकर कृष्ण ने आत्मा को अजर अमर नित्य और अविनाशी बताया। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के पन्द्रहवें मंत्र में वेद भगवान ने भी '**वायुरनिलम-मृतम्थेदं भस्मान्तं शरीरं**' कहकर आत्मा की अजरता अमरता और शरीर के मरणधर्मा होने को स्थापित किया है। यहां यह स्पष्ट हो जाता है कि जीवात्मा मृत्यु से परे है और हमारा मनुष्य का तन अर्थात ईश्वर प्रदत्त साधन ही मरणधर्मा है। अब यदि हम इस रहस्य को समझ लें कि वास्तव में हम तो इस दिखाई देने वाली देह के अधिपति, इस रथ के संचालक रथी, इस शरीर के अधिष्ठाता शरीरी हैं और यह देही, रथी या शरीरी एक जीवात्मा के रूप से हमें आने वाली अवश्यंभावी मृत्यु का डर कभी नहीं सताएगा।

मृत्यु पर विजय वास्तव में मृत्यु के डर पर विजय है। एक डरा हुआ कायर व्यक्ति अपने जीवन में सैंकड़ों बार मरता है जबकि निडर साहसी मृत्यु के रहस्य को जानने वाला जीवन में केवल एक बार ही मृत्यु का आलिंगन करता है। पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने काव्य संग्रह ''मेरी इकयावन कविताएं'' में स्पष्ट रूप में लिखा है कि हे ईश्वर मुझे इतनी शक्ति देना कि अंतिम दस्तक पर स्वयं उठकर कपाट खोलूं और मृत्यु का आलिंगन करूं। योगेश्वर कृष्ण ने भी गीता का ज्ञान देते हुए मृत्यु को परिधान परिवर्तन की संज्ञा दी है। जैसे हम प्रतिदिन नहाकर नए वस्त्र पहन कर प्रसन्न होते हैं वैसे ही मृत्यु के उपरान्त इस जीवात्मा के पूर्व कर्मों के आधार पर मिलने वाले नए शरीर व साधन की प्राप्ति के लिए हमें शोक नहीं करना चाहिए अपितु नए साधन की प्राप्ति के लिए हमें प्रसन्नचित होना चाहिए।

वेद भगवान ने भी अनेकों स्थानों पर मृत्यु का शोक ना करने की या मृत्यु से उपर उठने की प्रेरणा दी है। जैसे अथर्ववेद में **त्वां मृत्युर्दयतां मा प्र मेष्ठाः** कहकर बताया कि मृत्यु तेरी रक्षा करे और तू समय से पूर्व न मरे। अथर्ववेद में ही **उत तवां मृत्योरपीपरं** कहकर वेद भगवान ने संदेश दिया हे जीवात्मा मैं मृत्यु से तुझको उपर उठाता हूं। **मृत्यो मा पुरूषवधीः** कहकर वेद ने संदेश दिया कि हे मृत्यु तू पुरूष को समय से पूर्व मत मार।

अब प्रश्न उठता है कि मनुष्य किस प्रकार मृत्यु के डर से विजय पाए और मृत्युंजय हो जाए। मृत्युंजय मंत्र की व्याख्या करते हुए जब हम खरबूजे की उपमा देते हैं और उसकी सुगंधि के चारों ओर फैल जाने की बात करते हैं तो हमें यही संदेश मिलता है कि मनुष्य के रूप में अपने इस सीमित जीवनकाल में ईश्वर प्रदत्त साधन मनुष्य के तन का उपयोग करते हुए ऐसे सुंदर यज्ञीय परोपकार के सद्कर्म करें जिससे हमारी सुगंधि यश चारों ओर फैल जाए और फिर चाहे मृत्यु के उपरान्त हमारा भौतिक शरीर रहे या ना रहे परन्तु हमारा यश रूपी शरीर सदा सर्वदा के लिए अमर हो जाए और हमारे चले जाने के उपरान्त भी जनमानस में हमारे कर्मों विचारों के माध्यम से हमें जीवित रख सके। वैसे भी शतपथ ब्राह्मण में अमरत्व की व्याख्या करते हुए कहा है कि जिसको उस परम ज्योति के दर्शन हो जाते है अर्थात जो जीवात्मा उस सर्व अन्तर्यामी परमात्मा को अपने ही अंदर आत्मसात कर लेता है वो अमर हो जाता है या जो मरणधर्मा अपनी समस्त कामनाओं को पूर्ण कर लेता है अर्थात यदि मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य अर्थात ईश्वर की अनुभूति करते हुए मोक्ष को प्राप्त हो जाता है वह अमर हो जाता है।

हम कह सकते हैं मृत्यु के रहस्य को समझकर अपने अर्थात जीवात्मा के और ईश्वर के सच्चे स्वरूप को समझते हुए ईश्वर को अन्तर्यामी रूप में अपने ही अंदर जान मान कर सद्कर्म करते हुए जो जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है वह मृत्यु पर विजय पा लेता है।

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर में ऋषि निर्वाण दिवस

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर में ऋषि निर्वाण दिवस बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया गया जिसकी अध्यक्षता माता जगदीश रानी, प्रधाना आर्य महिला सभा अमृतसर ने की। पं० बनारसी दास आर्य के ब्रह्मत्व में 11 हवन कुण्डों पर 11 परिवारों द्वारा हवन यज्ञ किया गया। पश्चात् कुमारी शिवानी आर्य, निर्मल आर्य के भजनों ने समय बांध दिया। माता जगदीश रानी ने अपने भजन तथा प्रवचन द्वारा स्त्रियों को जागरूक किया तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करके जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। पं० बनारसी दास आर्य ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में दयानन्द आर्य माडल स्कूल के बच्चों व अध्यापिकाओं का विशेष योगदान रहा। डा० प्रकाश चन्द, लक्षमण तिवारी, कीमती लाल आर्य, धनी राम हरजिन्द्र सिंह, बाल किशन हरविन्द्र कुमार व विनोद मादान जी का विशेष सहयोग मिला। बाद में प्रधान जी ने सब का धन्यवाद किया।

-पं० बनारसी दास आर्य मन्त्री

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द मठ वेद मन्दिर ढन्न मोहल्ला जालन्धर का वार्षिक उत्सव दिनांक 7 नवम्बर 2016 से दिनांक 13 नवम्बर 2016 तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य महावीर मुमुक्षु जी मुरादाबाद के प्रवचन एवं श्री राजेश अमर प्रेमी के मधुर भजन हुए। दिनांक 13 नवम्बर 2016 रविवार को पूर्णाहुति के साथ चतुर्वेद शतकम् पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य महावीर मुमुक्षु जी ने सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया। श्रीमती निधि कपूर एवं श्री राजेश कपूर जी के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया एवं ध्वज सन्देश दिया गया। ध्वजारोहण के पश्चात सभी ने जलपान किया और उसके पश्चात मुख्य कार्यक्रम आरम्भ हुआ। श्रीमती सीमा अनमोल एवं श्री राजेश प्रेमी जी ने मधुर भजनों से इस कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। आचार्य महावीर मुमुक्षु जी, डॉ . सतीश कपूर पूर्व रजिस्ट्रार डी. ए. वी. युनिवर्सिटी जालन्धर, श्रीमती सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज मॉडल टॉऊन जालन्धर, श्री अरविन्द घई प्रधान आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर ने अपने- अपने विचार प्रस्तुत किए। सभी मुख्य मेहमानों को साहित्य और सम्मान चिह्न देकर सम्मानित किया गया। मठ के प्रधान श्री कुन्दन लाल अग्रवाल जी ने सभी आए हुए विद्वानों, अतिथियों एवं वार्षिक उत्सव में सहयोग देने वाले महानुभावों का धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। तत्पश्चात सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया। इस अवसर पर सर्वश्री रवि मित्तल, प्रकाश चन्द्र सुनेजा, राजेन्द्र देव विज, सत्यशरण गुप्ता, अरूण कोहली, बाल कृष्ण अरोड़ा, विनीत आर्य आदि महानुभाव उपस्थित थे।

-कुन्दन लाल अग्रवाल प्रधान महर्षि दयानन्द मठ

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा धर्म का मूल स्वरूप

ले० -पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ही एक मात्र ऐसे विचारक महाभारत काल के बाद हुए हैं, जिन्होंने धर्म का सत्य स्वरूप संसार के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने वैदिक धर्म के अनुसार सिद्ध किया कि जिस धर्म मत में निम्न पांच मान्यताऐं पूर्ण रूप से समावेश हैं वहीं ईश्वरीय धर्म मानव कल्याण हेतु सत्य धर्म है, और जिसमें एक गुण का भी अभाव है वह पूरक धर्म नहीं कहा जा सकता है।

मूल पांच मान्यताऐं निम्न है

1. अहिंसा 2. न्याय 3. दया 4. सत्य 5. ईश्वर भक्ति

ये सब धर्म के पर्याय है यदि इनमें से एक गुण भी निकाल दिया जाये तो वह धर्म नहीं रह जाता। यह धर्म का वास्तविक स्वरूप हैं। जिन धर्म सम्प्रदायों में उक्त एक गुण का भी अभाव है तो वह किसी सूरत में धर्म संगठन नहीं है। आजकल जितने भी सम्प्रदाय धरती पर प्रचलित है, उनमें एक वैदिक धर्म को छोड़ कर सभी में कोई न कोई कमी है। कारण कोई हिंसक तो कोई असत्य का आश्रित कोई ईश्वर भक्ति से वंचित है। धर्म का स्वरूप महान है उसका कोई आर-पार नहीं। धर्म तो केवल वैदिक धर्म ही है जो मानव मात्र का बिना पक्षपात के कल्याण करता है। आइए विचार करते हैं।

1-अहिंसा

अनागोहत्या वै भीमा-(अथर्व) निरपराध की हत्या बड़ी भयंकर सजा देने वाली है क्योंकि संसार में सभी प्राणियों की रचना ईश्वर ने की है, इसलिए सब प्राणी ईश्वर के पुत्र हुए। पशु भी ईश्वर की रचना है। अत: पशु हत्या करके देवी देवताओं की पूजा से ईश्वर रुष्ट होते हैं, और हत्या करने वाले को भयंकर दण्ड़ देते हैं। देवताओं को खुश करने व अपना भला चाहने वाले जो देवताओं की पत्थर की मूर्ति के सामने पशु हत्या करते हैं उससे उनके संस्कार भी हिंसक बन जाते हैं। यही कारण है आज मानव जगत में चारों ओर हिंसा की प्रवृति वेगवती हो रही है।

समीक्षा

वैदिक धर्म पूर्ण रूप से अहिंसक है क्योंकि वेदों में केवल जगह-जगह अहिंसा का उपदेश दिया गया है। अन्य धर्म मत जो अहिंसा का समर्थन करते हैं उनको साधूवाद है किन्तु न्याय, दया, सत्य, और सत्य ईश्वर भक्ति के अभाव में वह मत पूर्ण धार्मिक नहीं कहा जा सकता है।

केवल वैदिक धर्म (आर्य-समाज) में ही उक्त पाचों गुणों का समावेश है इसलिए सर्व श्रेष्ठ वैदिक धर्म है।

2-अहिंसा

नीयते प्राप्यते विवक्षितार्थ सिद्धिस्नेन इति न्याय = (न्याय-दर्शन) अर्थात् = जिसके द्वारा किसी प्रतिपाद्य विषय की सिद्धि की जा सके जिसकी सहायता से किसी निश्चित सिद्धान्त पर पहुंचा जा सके उसी का नाम न्याय है।

न्याय दर्शन को चार भागों में विभक्त किजा जा सकता है।

1. सामान्य ज्ञान की समस्या को हर करना 2. जगत की पहेली को सुलझाना 3. जीवात्मा तथा मुक्ति 4. परमात्मा और उसका ज्ञान। ज्ञान दो प्रकार का होता है एक आर्ष ज्ञान और दूसरा अनार्ष ज्ञान

आर्ष ज्ञान की परिभाषा-ईश्वरीय व्यवस्थानुसार, वेदानुसार, सृष्टिक्रमानुसार, विज्ञान के अनुसार, और जैसी मेरी आत्मा, मन नहीं केवल आत्मा दूसरों से अपने लिये व्यवहार चाहती है वैसा ही दूसरों के साथ करना, और धर्म का सत्य स्वरूप, कर्म का सत्य स्वरूप, प्रत्येक आध्यात्म सत्य मान्यताऐं राजनीतिक सत्य मान्यताऐं सामाजिक सत्य मान्यताऐं आदि-आदि आर्ष ज्ञान कहलाता है।

अनार्ष ज्ञान की परिभाषा-निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी ईश्वर को मनुष्यों की काल्पनिक, मूर्तियों में सृष्टिक्रम के विरुद्ध बातों को मानना-जड़ की पूजा का अन्ध विश्वास काल्पनिक विज्ञान व सृष्टि क्रम के विरुद्ध धार्मिक ग्रन्थों की रचना, काल्पिनक देवी देवताओं के आगे अपने स्वार्थ के लिये पशु हत्या करना। अनेक जादू टोना भूत प्रेत, फलित ज्योतिष शास्त्रों की रचना आदि अनार्ष ज्ञान है। न्याय और अन्याय का भेद न समझ कर अन्याय का समर्थन करना आदि।

समीक्षा

वैदिक धर्म सत्य न्याय का पक्षधर है, सम्पूर्ण वेद शास्त्रों में कहीं पर भी अन्याय की शिक्षा नहीं दी गयी है। किन्तु अन्य धर्म सम्प्रदायों में न्याय को स्वार्थ की नजरों से किया गया है। इसलिये वह पूर्ण धर्म नहीं कहा जा सकता है। केवल वैदिक धर्म में उक्त पांचों गुणों का समावेश है इसलिए सर्वश्रेष्ठ वैदिक धर्म है।

3-दया

महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश के सातवें सम्मुलास से

प्रश्न-परमेश्वर दयालु व न्याय कारी है व नहीं ? उत्तर-हैं-प्रश्न = ये दोनों गुण परस्पर विरुद्ध है। जो न्याय करे तो दया और दया करे तो न्याय छूट जाए, क्योंकि न्याय उसको कहते हैं कर्ता के कर्मों के अनुसार न अधिक न न्यून सुख, दु:ख पहुंचाना, और दया उसको कहते हैं जो अपराधों को बिना दण्ड दिये छोड़ देना।

उत्तर = न्याय और दया नाम मात्र का ही भेद है। दया वही है कि उस डाकू को कारागार में रखकर पाप करने से बचाना डाकू पर दया, और उस डाकू को मार सकने से अन्य सहस्त्रों मनुष्य पर दया प्रकाशित होती है।

समीक्षा

वैदिक धर्म के अतिरिक्त वर्तमान में प्रचलित धार्मिक व सामाजिक व राजनैतिक संगठनों में निजि स्वार्थ की भावना चरम सीमा पर है। इसीलिए व्यवारिक जगत में परोपकार श्रद्धा परहित के संस्कार दिनों दिन न्यून होते जा रहे हैं। अधिकांश समुदाय दया का मूल उद्देश्य न समझ कर अन्धविश्वास व रुढ़ी परम्पराओं की गति में ही वृद्धि कर रहें हैं। आज दया शब्द के सही मायनों को समझने की अति आवश्यकता है।

3-सत्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय सम्मुलास में कहा है कि जो जो गुण कर्म स्वभाव और वेदों के अनुकूल हो वह-वह "सत्य" और उससे विरुद्ध असत्य है। दूसरा जो जो सृष्टिक्रम के अनुकूल है वह सत्य और जो जो विरुद्ध है वह सब असत्य है।

तीसरा-आप्त अर्थात जो धार्मिक, विद्वान सत्यवादी, निष्कपटियों का संग उपदेश के अनुकूल है वह सत्य और जो जो विरुद्ध है व असत्य है। चौथी अपनी आत्मा की पवित्रता विद्या के अनुकूल सुख अप्रिय, दु:ख प्रिय है वैसे सर्वत्र समझ लेना। पांचवी आत्म आठप्रमाणों अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिहास अर्थापति स्वभाव और अभाव है। यह सत्य की कसौटियां है।

समीक्षा

उपर्युक्त सत्य की कसौटियों के आधार पर केवल वैदिक धर्म व आर्य समाज ही सही उतरता है। बाकी अन्य धार्मिक संगठनों में किसी न किसी रूप में मान्यताएं असत्य पर आधारित होती है और उनका नेतृत्व पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर उन्हीं असत्य या रूढ़ी मान्यताओं को ही प्रचलित करते हैं जिससे मानव समाज में अति धार्मिक अन्धविश्वास फैलता जाता है।

5-ईश्वर मान्यता तथा भक्ति

ईश्वर की परिभाषा-ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त, नित्य, पवित्र, और सृष्टि कर्ता है। (आर्य समाज का दूसरा नियम) स हि सर्ववित सर्वकर्ता-(सा० दर्शन) वह परमात्मा सर्वान्तयामी और सब जगत का करता है।

नोट-वेदों में उपनिषिदों में, दर्शनों में व अन्य आर्ष ग्रन्थों में बताया गया है एक निराकार ईश्वर है और उसी की भान्ति करनी चाहिए।

समीक्षा

महाभारत काल के बाद सबसे विवादित ईश्वर का विषय रहा है। ईश्वर का सत्य ज्ञान न होने के कारण सम्पूर्ण विश्व में आपस में लड़ाई झगड़ा, मारकाट, सामाजिक शोषण, ईश्वर के नाम से साधारण मनुष्यों को भ्रमित करके अपनी-

(शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज सैक्टर 22-ए, चण्डीगढ़ में गुरूकुल स्थापना समारोह का हुआ भव्य आयोजन

चण्डीगढ़ की प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित आर्य समाज, सैक्टर 22-ए के प्रधान श्री सोमदत्त शास्त्री की प्रेरणा एवं प्रयास से आर्य समाज की कार्यकारिणी एवं साधारण सभा ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया है कि आर्य समाज के विशाल भवन में उपलब्ध लगभग 30 कमरे उपयोग में लाने के लिए यहाँ एक गुरूकुल संचालित किया जाए जिससे आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं को और अधिक कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा तथा आर्य समाज के विशाल भवन का सदुपयोग भी सुन्दर तरीके से हो सकेगा। आर्य समाज के इस ऐतिहासिक निर्णय को क्रियान्वित करने के लिए विजयादशमी (दशहरा) के दिन 11 अक्तूबर 2016 को आर्य समाज में एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम को गुरूकुल स्थापना समारोह के रूप में मनाया गया।

इस अवसर पर अनेक गुरूकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द स्वामी ने स्पष्ट किया कि जब तक हम आर्ष पाठविधि के अनुसार गुरूकुल नहीं चलाएँगे तब तक आर्य समाज का भविष्य सुरक्षित नहीं रखा जा सकता। स्वामी जी ने घोषणा की कि इस गुरूकुल में शीघ्र ही दो दर्जन विद्यार्थी दाखिल कर दिए जाएँगे और यह गुरूकुल बहुत सुन्दर तरीके से चलेगा। उन्होंने कहा कि हमें डा. शिव कुमार शास्त्री जैसे आचार्य मिल गए हैं तो गुरूकुल शुरू होने में कोई कठिनाई नहीं आ सकती। गुरूकुल गौतम नगर के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, वैदिक विद्वान डा. शिव कुमार शास्त्री, दयानन्द पीठ पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के अध्यक्ष डा. वीरेन्द्र अलंकार, दयानन्द पीठ के पूर्व अध्यक्ष तथा संस्कृत पीठ के पूर्व अध्यक्ष डा. विक्रम कुमार विवेकी, डा. नरेन्द्र आहुजा विवेक, पुरातत्व विभाग हरियाणा सरकार के डा. सुरेन्द्र कुमार, श्री शैलेन्द्र वर्मा, श्रीमती अंजू आहुजा, श्री बलवीर सिंह चौहान, स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला भट्ट, श्री विजय आर्य आदि की उपस्थिति में समारोह बड़े उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। मंच का संचालन समाज के प्रधान श्री सोमदत्त शास्त्री ने अत्यंत कुशलता एवं सुन्दर तरीके से धन्यवाद पूर्वक सम्पन्न किया।

आप सभी महानुभावों का सहयोग और सुझाव अपेक्षित है।

प्रेमचन्द्र गुप्ता (मन्त्री) मो. 9216192336

जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव 24 से 27 नवम्बर 2016 तक मनाया जा रहा है। जिसमें श्री पं. बाल कृष्ण शास्त्री यज्ञ के ब्रह्मा होंगे। आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य प्रहलाद शास्त्री (दिल्ली) के उत्तम प्रवचन एवं पं. घनश्याम प्रेमी व उपेन्द्र आर्य जी (मुजफ्फरनगर)के मनोहर भजन होंगे। कार्यक्रम 24, 25, 26 नवम्बर को प्रात: 7:30 से 9:30 बजे तक एवं रात्रि 7:00 से 9:00 बजे तक होगा। 27 नवम्बर 2016 रविवार को समापन समारोह प्रात: 8:30 से 12:30 बजे तक होगा। आप सभी परिवार सहित सादर आमन्त्रित हैं।

-विजय सरीन प्रधान आर्य समाज

पृष्ठ 6 का शेष-महर्षि दयानन्द सरस्वती...

अपनी दुकानदारियां करना रहा है, और आज ईश्वर के नाम से पाखण्ड चरम सीमा पर पहुंच गया है। कोई भी सत्य को समझने को तैयार नहीं है, अपितु अपने पूर्वाग्रहों से ग्रसित मरने मारने को तैयार है।

अत: धर्म के अतिरिक्त प्रचलित धर्म मतों में अंहिसा, न्याय, दया, सत्य, और ईश्वर भक्ति के इन गुणों में से कोई न कोई कभी होने के कारण पूर्ण धार्मिक संगठन नहीं माना जा सकता है।

महर्षि दयानन्द सरास्वती जी द्वारा निर्देशित सिद्धान्तों व आर्य समाज को एक न एक दिन संसार को मानना ही पड़ेगा।

शोक संवेदना

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सन् 1883 में स्थापित परोपकारिणी सभा अजमेर के प्रधान प्रो० डॉ० धर्मवीर जी के देहवासान का समाचार पाकर आर्य जगत् स्तब्ध रह गया। पूरे विश्व में वे जाने जाते थे। आर्य समाज नई मण्डी मुजफरनगर में प्रात: विशेष शान्ति यज्ञ के बाद शोक सभा का आयोजन किया गया। आर्य समाज के प्रधान श्री आनन्दपालसिंह आर्य ने कहा कि उनके जाने से कष्टदायी अपूरणीय क्षति हुई है। इं. करण सिंह सिद्धान्त शास्त्री जी ने प्रो० साहब के जीवन पर उनकी विद्वता एवं सात्विक जीवन शैली पर प्रकाश डाला। श्री योगेश्वर दयाल आर्य जी ने बताया कि प्रो० धर्मवीर अनुपम विद्वान थे वे अत्यन्त सरल थे। पूरे विश्व में वेद प्रचारार्थ उनकी मांग थी। अन्य उपस्थितों ने भी अपने संस्मरण के आधार पर प्रो० साहब के अपनी-अपनी श्रद्धाञ्जली अर्पित की। अन्त में दो मिनट का मौन रखकर सामूहिक श्रद्धाञ्जली प्रो० साहब को अर्पित की गई।

आर. पी. शर्मा (मन्त्री)

आर्य समाज नई मण्डी मुजफ्फरनगर

ऋर्षि निर्वाण दिवस मनाया

गाँधी आर्य हाई स्कूल बरनाला में आर्य समाज बरनाला द्वारा स्वामी दयानन्द सरस्वती बलिदान दिवस एवं दीपावली पर्व मनाया गया। जिसमें मुख्य यजमान के रूप में श्री मदन लाल बांसल शेलर वाले विशेष रूप से पधारे। आर्य समाज के प्रधान डा० सूर्यकाँत शौरी ने प्रोग्राम की अध्यक्षता की। प्रोग्राम में श्री लाल बहादुर शास्त्री महिला कालेज एल. बी. एस-कालिजीयेट स्कूल, गाँधी आर्य सीनियर सेकैंडरी स्कूल, दयानन्द केन्द्रीय विद्यामन्दिर, आर्य माडल स्कूल, गाँधी आर्य हाई स्कूल की प्रबन्धक समिति प्रिं० समूह स्टाफ एवं विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

प्रोग्राम के आरम्भ में श्री रणजीत शास्त्री जी द्वारा हवन-यज्ञ करवाया गया। जिसमें मदन लाल बाँसल ने यज्ञमान के तौर पर आहुतियाँ डाली। बरनाला की समूह शिक्षण संस्थाओं द्वारा स्वामी दयानन्द सरस्वती के बारे भजन एवं भाषण प्रस्तुत किए गए। प्रोग्राम को डा० सूर्यकान्त शौरी, भारत मोदी, रामचन्द्र आर्य, रामकुमार सोबती, सतीश सिंघवानी, सुखमहिन्द्र सिंह संधु, श्री केवल जीन्दल तिलकराम तथा अन्य सदस्यो ने सम्बोधित किया। प्रोग्राम में श्री सूरजमान, शिवकुमार बत्रा, सुखमहिन्द्र सिंह सिन्धु, रामशरण दास गोयल विजय आर्य, प्रि० डा० नीलम शर्मा, प्रि० रंजना मैनन प्रिं० रंजना रानी, प्रि० सुमन लता, प्रि० रजनी रानी निर्देशक अनीता मित्तल के अतिरिक्त शहर के अन्य सम्मानित व्यक्ति उपस्थित थे। शान्ति पाठ के उपरान्त प्रसाद वितरण किया गया।

रामकुमार सोबती प्रिंसीपल

गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला

पृष्ठ 2 का शेष-क्या वैदिक वर्णव्यवस्था...

सर्वोपरि सामाजिक व्यवस्था है परन्तु आज वह व्यावहारिक नहीं है। भविष्य के प्रति कुछ कहा नहीं जा सकता परन्तु आज जैसी परिस्थितियां हैं, उससे नहीं लगता कि भविष्य में कभी वैदिक वर्णव्यवस्था वह स्थान ले सकेगी जैसा कि जन्मना वर्ण व्यवस्था के अस्तित्व व प्रचलन में आने से पूर्व वैदिक वर्ण व्यवस्था का था। जो भी हो, हम एक साधारण पाठक व वैदिक साहित्य का अध्ययन करने वाले व्यक्ति हैं तथा हमारा इस विषय में कोई पूर्वाग्रह नहीं है। आज समाज के विद्वानों से अनुरोध है कि वह इस विषय में अपने विचार देकर हमें कृतार्थ करें। हम उनके आभारी होगें।

www.thearyasamaj.org

वेदवाणी

अश्वारोही बनो

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्त्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितः तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा॥
-अ० १९/५३/१

ऋषिः-भृगुः॥ देवता-कालः॥ छन्दः-त्रिष्टुप्॥

विनय-कालरूपी महाबली घोड़ा चल रहा है। यह सब संसार को खींचे लिये जा रहा है। इस विश्व के सब प्रकार के जगतों में सात तत्त्व काम कर रहे हैं (सब जगतों में सात लोक, सात भूमियाँ हैं, सप्त प्रकार की सृष्टि है और प्रत्येक प्राणी में भी सात प्राण, सात धातु हैं)। ये ही सात रश्मियाँ (रश्मियाँ) हैं, जिनसे यह विश्व उस कालरूपी घोड़े से जुड़ा हुआ है। काल की महाशक्ति से जुड़कर इस ब्रह्माण्ड के सब भुवन, सब लोक, सब मनुष्य, सब प्राणी, सब उत्पन्न वस्तुएँ चक्र की भाँति घूम रही हैं। इन असंख्य भुवनों में, उत्पन्न चर या अचर पदार्थों के असंख्यात अक्षरों (व्यक्ति-केन्द्रों) को गति देता हुआ, यह महाशक्ति काल अपने इन भुवन-चक्रों द्वारा इस समस्त विश्व को चला रहा है। इस प्रकार यह संसार न जाने कब से चलाया जा रहा है ? हम परम तुच्छ मनुष्यों की क्या गणना, असंख्यों वर्षों की आयुवाले बहुत-से सौर-मण्डल भी जीर्ण होकर सदा से इस अनन्तकाल में लीन होते गये हैं, परन्तु कभी जीर्ण न होता हुआ यह कालदेव आज भी अपनी उसी और उतनी ही शक्ति से इस विश्व-ब्रह्माण्ड को खींचे लिये जा रहा है। इस कालदेव को मेरे कोटि-कोटि प्रणाम हैं। भाइयो ! क्या तुम्हें यह कभी जीर्ण न होने वाला, सब विश्व को चलाने वाला महावीर्य अश्व दीख रहा है ? याद रखो इस महावेगवान् अश्व की सवारी वे ही ले सकते हैं जो ज्ञानी हैं-जो समय को पहचानते हैं, जिनकी दृष्टि इस सबको हिलाने वाले अनन्त कालदेव के दर्शन पाकर विशाल हो गई है, अतएव जो क्रान्तदर्शी हैं, जो विशाल भूत और भविष्य को दूर तक देख रहे हैं, जो अज्ञानी या अतिचञ्चल मनुष्य, स्थिर ज्ञान-प्रकाश को न पाकर क्षुद्र दृष्टि वाले और काल के महत्त्व को न पहचानने वाले हैं, वे तो काल-रथ पर नहीं चढ़ सकते और न चढ़ सकने के कारण वे या तो कुचले जाते हैं, या कुछ दूर तक घिसटते जाकर कहीं इधर-उधर दूर जा पड़ते हैं और मार्ग-भ्रष्ट हो जाते हैं, या इसके नीचे यूँ ही पड़े रहकर नष्ट हो जाते हैं, इसीलिए काल नाम मृत्यु का हो गया है, परन्तु वास्तव में काल तो वह महाशक्तिवाला, महावेगवाला यान है, जिस पर सवार होकर हम बड़ी जल्दी अपना मार्ग तय करके लक्ष्य पर पहुंच सकते हैं, अतः आओ, हम आज से काल के सवार बनें, अपने पल-पल, क्षण-क्षण का सदा सदुपयोग करें, इस महाशक्ति को कभी भी गँवाएँ नहीं और काल की इस विशालता को देखते हुए सदा ऊँची-विशाल दृष्टि से ही समय के अनुसार अपना कर्त्तव्य निश्चय किया करें।

पं. सुनील दत्त शास्त्री जी का निधन

आर्य समाज फिरोजपुर शहर के पुरोहित एवं वैदिक विद्वान् पं. सुनील दत्त शास्त्री जी का मंगलवार दिनांक 8 नवम्बर 2016 को अकस्मात् निधन हो गया। पं. सुनील दत्त शास्त्री जी बहुत ही उच्चकोटि के विद्वान् एवं मधुरभाषी थे। उनका अन्तिम संस्कार फिरोजपुर शहर में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनके अन्तिम संस्कार में मोगा, जीरा, फाजिल्का, मुक्तसर, फरीदकोट, कोटकपुरा की आर्य समाजों के पदाधिकारियों व अन्य महानुभावों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। फिरोजपुर शहर की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों एवं पदाधिकारियों ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किए। पं. सुनील दत्त शास्त्री जी की आत्मिक शान्ति के लिए अन्तिम शोक सभा का आयोजन दिनांक 20 नवम्बर 2016 रविवार को आर्य समाज मन्दिर फिरोजपुर शहर में सम्पन्न होगा। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे व परिवार को इस असहनीय दु:ख को सहन करने की धैर्य शक्ति प्रदान करे। ऐसे मधुरभाषी, विद्वान् व्यक्तित्व की कमी आर्य समाज हमेशा महसूस करेगा।

-मनोज आर्य महामन्त्री आर्य समाज फिरोजपुर शहर

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।